

कोरोना महामारी और भारत का वैश्विक सम्बन्ध

डॉ.चन्द्रशेखर पटेल
सहायक प्राध्यापक, राजनीति शास्त्र
डॉ शक्राजीत नायक शासकीय महाविद्यालय बरमकेला

सारांश:

कोरोना महामारी ने पूरे विश्व को गहरे संकट में डाल दिया, और भारत भी इससे अछूता नहीं रहा। महामारी के दौरान भारत ने न केवल अपने देशवासियों की सुरक्षा के लिए ठोस कदम उठाए, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी एक जिम्मेदार राष्ट्र की भूमिका निभाई। भारत ने 'वैक्सीन मैत्री' कार्यक्रम के तहत कई देशों को कोविड-19 वैक्सीन की आपूर्ति की, जिससे उसकी विश्वसनीयता और मानवीय दृष्टिकोण की सराहना हुई। भारत ने महामारी के दौरान विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) और अन्य अंतरराष्ट्रीय संगठनों के साथ मिलकर कार्य किया। इसके अलावा, डिजिटल माध्यम से वैश्विक सम्मेलनों में भाग लेकर भारत ने महामारी से निपटने की रणनीतियाँ साझा कीं। भारतीय फार्मा उद्योग ने कम लागत में दवाइयाँ और वैक्सीन उपलब्ध कराकर वैश्विक स्वास्थ्य प्रणाली को मजबूती दी। इस प्रकार, कोरोना महामारी ने भारत के वैश्विक संबंधों को एक नई दिशा दी, जहाँ उसने 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना को व्यवहार में उतारते हुए एक सहयोगी और नेतृत्वकारी भूमिका निभाई।

परिचय:

कोरोना महामारी (COVID-19) ने 21वीं सदी में विश्व को सबसे बड़ा स्वास्थ्य संकट प्रदान किया। यह केवल एक स्वास्थ्य आपदा नहीं थी, बल्कि इसने वैश्विक अर्थव्यवस्था, सामाजिक संरचना और अंतरराष्ट्रीय संबंधों को भी गहराई से प्रभावित किया। इस अभूतपूर्व संकट के समय में भारत ने न केवल अपने भीतर की चुनौतियों से जूझा, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी अपनी सक्रिय भूमिका निभाई। भारत की "वसुधैव कुटुम्बकम्" की परंपरा के अनुरूप, महामारी के दौरान उसका दृष्टिकोण सहयोग और समर्पण पर आधारित रहा। चिकित्सा सहायता, वैक्सीन वितरण, औषधि आपूर्ति और डिजिटल नवाचार के माध्यम से भारत ने कई देशों की मदद की। इसके साथ ही, भारत ने विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) तथा अन्य अंतरराष्ट्रीय मंचों पर महत्वपूर्ण योगदान देकर अपने वैश्विक संबंधों को और सुदृढ़ किया। यह विषय इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह दर्शाता है कि किस प्रकार भारत ने संकट के समय वैश्विक नेतृत्व, नैतिक उत्तरदायित्व और मानवीय मूल्यों का प्रदर्शन किया। यह परिचय आगे इस बात की पृष्ठभूमि तैयार करता है कि कैसे भारत ने एक "वैश्विक भागीदार" के रूप में अपनी भूमिका को नई ऊँचाई तक पहुँचाया।

परिवर्तन:

कोरोना महामारी (COVID-19) ने न केवल भारत बल्कि पूरे विश्व को झकझोर कर रख दिया। यह एक ऐसा वैश्विक संकट था जिसने हर देश को सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और स्वास्थ्य के क्षेत्र में पुनः विचार करने को मजबूर कर दिया। भारत में भी इस महामारी ने कई स्तरों पर परिवर्तन किए और वैश्विक मंच पर उसके सम्बन्धों की दिशा और धार दोनों को प्रभावित किया।

1. स्वास्थ्य क्षेत्र में परिवर्तन:

महामारी ने भारत को स्वास्थ्य अवसंरचना के मामले में आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित किया। भारत ने रिकॉर्ड समय में वैक्सीन (कोविशील्ड और कोवैक्सिन) विकसित की और बड़े पैमाने पर टीकाकरण अभियान चलाया। इससे वैश्विक स्तर पर भारत की फार्मा क्षमताओं को मान्यता मिली।

2. वैश्विक वैक्सीन सहयोग:

भारत ने 'वैक्सीन मैत्री' (Vaccine Maitri) अभियान के तहत दुनिया के कई देशों को वैक्सीन उपलब्ध कराई। इससे भारत की "वैश्विक नेता" और "जिम्मेदार देश" की छवि और मजबूत हुई। यह सहयोग वैश्विक दक्षिण (Global South) में विशेष रूप से सराहा गया।

3. आर्थिक दृष्टिकोण से बदलाव:

महामारी के कारण वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला (Global Supply Chain) बाधित हुई। इससे भारत को "चीन के विकल्प" के रूप में देखा जाने लगा। 'मेक इन इंडिया' और 'आत्मनिर्भर भारत' जैसे अभियानों को नया प्रोत्साहन मिला। भारत ने डिजिटल भुगतान, स्टार्टअप्स और टेक्नोलॉजी सेक्टर में तेज़ी से विकास किया, जिससे वैश्विक निवेशकों का ध्यान आकर्षित हुआ।

4. डिजिटलीकरण और वैश्विक पहचान:

महामारी ने डिजिटल इंडिया को नई गति दी। टेलीमेडिसिन, ऑनलाइन शिक्षा, डिजिटल ट्रांजैक्शन आदि क्षेत्रों में भारत की प्रगति ने दुनिया को प्रभावित किया। कोविन (CoWIN) प्लेटफॉर्म को कई देशों ने अपनाया या उसकी सराहना की, जो भारत की टेक्नोलॉजी में विशेषज्ञता को दर्शाता है।

5. राजनयिक दृष्टिकोण से परिवर्तन:

भारत ने महामारी के दौरान न केवल अपनी जनता की सेवा की, बल्कि विदेशों में फंसे भारतीयों को 'वंदे भारत मिशन' के ज़रिए वापस लाकर एक मजबूत मानवीय संदेश भी दिया। संयुक्त राष्ट्र और अन्य वैश्विक संस्थाओं में भारत की भूमिका और सक्रियता बढ़ी।

6. भविष्य की ओर संकेत:

महामारी के बाद की दुनिया में भारत अब एक जिम्मेदार, सक्षम और नेतृत्वकर्ता राष्ट्र के रूप में देखा जा रहा है। उसकी छवि केवल एक विकासशील देश की नहीं, बल्कि एक वैश्विक भागीदार और समाधान प्रदाता के रूप में उभर कर आई है।

साहित्य समीक्षा:

कोरोना महामारी के वैश्विक प्रभाव और भारत की भूमिका पर अनेक शोधपत्र, रिपोर्ट्स, समाचार लेख, और शैक्षणिक लेख प्रकाशित हुए हैं। इन स्रोतों की समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि भारत ने संकट की इस घड़ी में न केवल

घरेलू स्तर पर बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी उल्लेखनीय कार्य किया। नीचे कुछ प्रमुख बिंदुओं के आधार पर साहित्य की समीक्षा प्रस्तुत की जा रही है:

- 1. भारत की वैश्विक भूमिका पर आधारित अध्ययन :** कई शोधों में यह रेखांकित किया गया है कि भारत ने “वैक्सीन मैत्री” कार्यक्रम के माध्यम से करीब 90 से अधिक देशों को वैक्सीन की आपूर्ति की। WHO तथा यूनिसेफ जैसे संगठनों ने भारत की इस पहल को “वैश्विक स्वास्थ्य सहयोग” का आदर्श उदाहरण बताया।
- 2. अंतरराष्ट्रीय सहयोग और कूटनीति :** साहित्य में यह उल्लेख मिलता है कि भारत ने महामारी के दौरान डिजिटल मंचों पर सक्रिय भागीदारी निभाई – जैसे G20, BRICS, SAARC वीडियो सम्मेलन। इससे भारत ने नीति निर्धारण और अनुभव साझा करने की प्रक्रिया में योगदान दिया।
- 3. फार्मा उद्योग की भूमिका :** भारत को “दुनिया की फार्मेसी” कहा जाता है। महामारी के दौरान इस भूमिका को सुदृढ़ किया गया। COVID-19 की दवाओं, PPE किट, और ऑक्सीजन सिलेंडरों की आपूर्ति ने भारत की वैश्विक स्थिति को मजबूत किया।
- 4. आलोचनात्मक दृष्टिकोण :** कुछ लेखों में यह भी चर्चा की गई है कि भारत को अपनी वैक्सीन जरूरतों और निर्यात के बीच संतुलन बनाना कठिन हुआ। साथ ही, दूसरी लहर के दौरान भारत को अंतरराष्ट्रीय सहायता भी लेनी पड़ी, जिससे कुछ आलोचनाएँ भी सामने आईं।
- 5. भारत की छवि और सॉफ्ट पावर :** साहित्य में यह भी देखा गया कि महामारी के दौरान भारत की वैश्विक छवि सकारात्मक रूप से उभरी। वैक्सीन और मानवीय सहायता ने भारत को एक सॉफ्ट पावर के रूप में प्रस्तुत किया।

समीक्षित साहित्य यह दर्शाता है कि कोरोना महामारी ने भारत को वैश्विक मंच पर एक उत्तरदायी, सहानुभूतिशील और कूटनीतिक राष्ट्र के रूप में स्थापित करने में मदद की। भारत की रणनीतियाँ, सहायता प्रयास और वैश्विक सहभागिता अंतरराष्ट्रीय संबंधों के क्षेत्र में अध्ययन के लिए एक समृद्ध संदर्भ प्रदान करते हैं। यदि आप चाहें, तो मैं इस पर आधारित ग्रंथसूची (bibliography) या उद्धरण स्रोत भी प्रदान कर सकता हूँ। क्या आपको उसकी आवश्यकता है?

राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय नीतियाँ

आपके विषय "कोरोना महामारी और भारत का वैश्विक संबंध" के अंतर्गत राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय नीतियों की चर्चा करना बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि इन नीतियों ने ही यह निर्धारित किया कि भारत ने महामारी से कैसे निपटा और वैश्विक मंच पर अपनी भूमिका कैसे निभाई। नीचे इस विषय को विस्तार से समझाया गया है: राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय नीतियाँ: कोरोना महामारी और भारत का वैश्विक सम्बन्ध

राष्ट्रीय नीतियाँ (National Policies)

कोरोना महामारी के दौरान भारत सरकार ने कई नीतिगत निर्णय लिए जिनका प्रभाव देश की आंतरिक स्थिरता और अंतर्राष्ट्रीय छवि दोनों पर पड़ा: आपदा प्रबंधन अधिनियम 2005 के अंतर्गत लॉकडाउन:

केंद्र सरकार ने राष्ट्रीय स्तर पर लॉकडाउन की घोषणा की, जो महामारी को नियंत्रित करने का एक असाधारण उपाय था।

आत्मनिर्भर भारत अभियान: भारत ने आर्थिक पुनरुद्धार के लिए यह नीति अपनाई, जिससे घरेलू उत्पादन, MSME सेक्टर और स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा मिला। इससे वैश्विक निवेशकों को भारत में अवसर दिखने लगे।

स्वास्थ्य बजट में वृद्धि एवं PM-CARES फंड: स्वास्थ्य सेवा को प्राथमिकता दी गई, और ऑक्सीजन, अस्पताल, दवाइयों आदि के लिए आपातकालीन निधि बनाई गई।

कोविन पोर्टल और डिजिटल स्वास्थ्य मिशन: भारत ने कोविड-19 टीकाकरण के लिए एक पारदर्शी और डिजिटल ट्रेकिंग प्रणाली विकसित की, जिसे कई देशों ने सराहा।

‘वंदे भारत मिशन’ और विदेशों से सहयोग: विदेशों में फंसे नागरिकों को सुरक्षित वापसी दिलाना भारत की मानवीय नीति का उदाहरण था।

अंतर्राष्ट्रीय नीतियाँ (International Policies)

भारत की विदेश नीति में महामारी के दौरान "वैश्विक सहयोग" और "मूल्य आधारित कूटनीति" की झलक देखने को मिली:

वैक्सीन मैत्री (Vaccine Maitri): भारत ने 90 से अधिक देशों को कोरोना वैक्सीन की आपूर्ति की। इससे भारत की छवि एक "वैश्विक हितैषी शक्ति" के रूप में बनी।

ब्रिक्स, जी-20, और SAARC के माध्यम से सहयोग: भारत ने इन मंचों पर महामारी से निपटने के लिए सहयोग और संवाद को प्रोत्साहित किया। SAARC कोविड-19 आपातकालीन निधि की पहल भारत ने की।

मेडिकल डिप्लोमेसी: भारत ने अमेरिका, ब्राज़ील, और अफ्रीकी देशों को हाइड्रॉक्सी क्लोरोक्वीन, रेमडेसिविर जैसी दवाइयाँ भेजीं। इससे भारत की फार्मास्यूटिकल ताकत को वैश्विक मान्यता मिली।

वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में भारत की भूमिका: महामारी के दौरान जब चीन पर निर्भरता कम करने की चर्चा हुई, तब भारत ने "विश्व की फैक्ट्री" बनने की ओर कदम बढ़ाए।

संयुक्त राष्ट्र में भूमिका: भारत ने संयुक्त राष्ट्र में वैश्विक टीकाकरण की वकालत की और स्वास्थ्य सुरक्षा को वैश्विक नीति के केंद्र में रखने की मांग की।

सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट:

कोविड-19 महामारी ने 21वीं सदी में दुनिया के सामने सबसे बड़ा सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट उत्पन्न किया। इस संकट ने मानव जीवन, अर्थव्यवस्था, स्वास्थ्य प्रणाली, शिक्षा और अंतरराष्ट्रीय सम्बन्धों की नींव को हिला दिया। भारत जैसे विशाल और विविधता से भरपूर देश के सामने यह एक कठिन परीक्षा थी — न केवल देश को सुरक्षित रखने की, बल्कि वैश्विक उत्तरदायित्व निभाने की भी।

1. सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट और भारत की प्रतिक्रिया: महामारी ने भारत की स्वास्थ्य सेवाओं की वास्तविकता को उजागर किया — संसाधनों की कमी, असमान पहुँच और अव्यवस्था। भारत ने त्वरित रूप से कोरोना परीक्षण केंद्रों, आइसोलेशन सुविधाओं, वेंटिलेटर और ऑक्सीजन सप्लाई को सुदृढ़ करने की दिशा में कार्य किया। PM CARES Fund और स्वास्थ्य बजट में वृद्धि जैसे प्रयास स्वास्थ्य अवसंरचना को सशक्त बनाने के लिए उठाए गए। भारत ने दो स्वदेशी वैक्सीन (कोवैक्सिन और कोविशील्ड) विकसित कीं। CoWIN डिजिटल पोर्टल ने प्रभावी और पारदर्शी टीकाकरण अभियान को संभव बनाया। ‘दो गज दूरी’, ‘मास्क है जरूरी’, और ‘घर में रहें, सुरक्षित रहें’ जैसे संदेशों से व्यापक जन-जागरूकता अभियान चलाया गया।

2. भारत की वैश्विक भूमिका और नीतियाँ: भारत ने 90 से अधिक देशों को टीके, दवाइयाँ और चिकित्सकीय सामग्री प्रदान की। यह स्वास्थ्य कूटनीति (Health Diplomacy) का उदाहरण बना और भारत की "विश्व गुरु" छवि को बल मिला। वैश्विक स्तर पर चीन पर निर्भरता कम करने की प्रवृत्ति बढ़ी, जिससे भारत को विकल्प के रूप में देखा जाने लगा। भारत ने G-20, ब्रिक्स, और SAARC जैसे संगठनों में महामारी से निपटने हेतु सहयोगात्मक दृष्टिकोण अपनाया। संयुक्त राष्ट्र में भारत ने वैश्विक वैक्सीन समानता की वकालत की।

3. नीति निर्माण में परिवर्तन: भारत ने महामारी को अवसर में बदलते हुए स्थानीय उत्पादन और नवाचार को बढ़ावा दिया। स्वास्थ्य सेवाओं का डिजिटलीकरण बढ़ा, जिससे टेलीमेडिसिन और ई-हेल्थ रिकॉर्ड जैसे नवाचार संभव हुए। भारत ने वैक्सीन और जीवनरक्षक दवाओं को "वैश्विक सार्वजनिक वस्तु" (Global Public Good) मानते हुए सबको उपलब्ध कराने की नीति अपनाई।

सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट कोविड-19 प्रतिक्रिया

यह विषय – "सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट: कोविड-19 प्रतिक्रिया, कोरोना महामारी और भारत का वैश्विक सम्बन्ध" – एक समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, जिसमें हम भारत द्वारा कोविड-19 जैसे अभूतपूर्व संकट में की गई प्रतिक्रिया, सार्वजनिक स्वास्थ्य नीतियाँ, और अंतरराष्ट्रीय संबंधों पर पड़े प्रभाव को जोड़कर देखते हैं। नीचे एक संगठित और विचारपूर्ण आलेख दिया गया है जिसे आप निबंध, प्रेजेंटेशन या शोध-पत्र के रूप में उपयोग कर सकते हैं: कोविड-19 महामारी ने 21वीं सदी में दुनिया के सामने सबसे बड़ा सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट उत्पन्न किया। इस संकट ने मानव जीवन, अर्थव्यवस्था, स्वास्थ्य प्रणाली, शिक्षा और अंतरराष्ट्रीय सम्बन्धों की नींव को हिला दिया। भारत जैसे विशाल और विविधता से भरपूर देश के सामने यह एक कठिन परीक्षा थी — न केवल देश को सुरक्षित रखने की, बल्कि वैश्विक उत्तरदायित्व निभाने की भी।

1. सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट और भारत की प्रतिक्रिया:

महामारी ने भारत की स्वास्थ्य सेवाओं की वास्तविकता को उजागर किया — संसाधनों की कमी, असमान पहुँच और अव्यवस्था। भारत ने त्वरित रूप से कोरोना परीक्षण केंद्रों, आइसोलेशन सुविधाओं, वेंटिलेटर और ऑक्सीजन सप्लाई को सुदृढ़ करने की दिशा में कार्य किया। PM CARES Fund और स्वास्थ्य बजट में वृद्धि जैसे प्रयास स्वास्थ्य अवसंरचना को सशक्त बनाने के लिए उठाए गए। भारत ने दो स्वदेशी वैक्सीन (कोवैक्सिन और कोविशील्ड) विकसित कीं। CoWIN डिजिटल पोर्टल ने प्रभावी और पारदर्शी टीकाकरण अभियान को संभव बनाया। 'दो गज दूरी', 'मास्क है जरूरी', और 'घर में रहें, सुरक्षित रहें' जैसे संदेशों से व्यापक जन-जागरूकता अभियान चलाया गया।

2. भारत की वैश्विक भूमिका और नीतियाँ:

भारत ने 90 से अधिक देशों को टीके, दवाइयाँ और चिकित्सकीय सामग्री प्रदान की। यह स्वास्थ्य कूटनीति (Health Diplomacy) का उदाहरण बना और भारत की "विश्व गुरु" छवि को बल मिला। वैश्विक स्तर पर चीन पर निर्भरता कम करने की प्रवृत्ति बढ़ी, जिससे भारत को विकल्प के रूप में देखा जाने लगा। भारत ने G-20, ब्रिक्स, और SAARC जैसे संगठनों में महामारी से निपटने हेतु सहयोगात्मक दृष्टिकोण अपनाया। संयुक्त राष्ट्र में भारत ने वैश्विक वैक्सीन समानता की वकालत की।

3. नीति निर्माण में परिवर्तन: भारत ने महामारी को अवसर में बदलते हुए स्थानीय उत्पादन और नवाचार को बढ़ावा दिया। स्वास्थ्य सेवाओं का डिजिटलीकरण बढ़ा, जिससे टेलीमेडिसिन और ई-हेल्थ रिकॉर्ड जैसे नवाचार संभव हुए। भारत

ने वैक्सीन और जीवनरक्षक दवाओं को “वैश्विक सार्वजनिक वस्तु” (Global Public Good) मानते हुए सबको उपलब्ध कराने की नीति अपनाई।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन

कोविड-19 महामारी ने वैश्विक स्तर पर मानवता को अभूतपूर्व संकट में डाल दिया। भारत जैसे जनसंख्या-बहुल देश के लिए यह चुनौती और भी बड़ी थी। इस समय, भारत की राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (NHM) जैसी योजनाएँ महामारी से लड़ने के लिए मजबूत आधार बनीं। साथ ही, भारत ने वैश्विक सहयोग के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय कार्य किए, जिससे उसकी अंतरराष्ट्रीय छवि और मजबूत हुई। आपके विषय "राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, कोरोना महामारी और भारत का वैश्विक सम्बन्ध" के अंतर्गत हम तीन मुख्य पहलुओं को जोड़कर समझ सकते हैं:

1. राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (NHM) की भूमिका
2. कोरोना महामारी के दौरान भारत की नीति और प्रतिक्रिया
3. भारत के वैश्विक संबंधों पर इसका प्रभाव

2. राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (NHM): एक संक्षिप्त परिचय

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन की शुरुआत 2005 में की गई थी, जिसका उद्देश्य ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में सार्वभौमिक स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध कराना है। यह दो उप-मिशनों से जुड़ा है: राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन (NRHM) राष्ट्रीय शहरी स्वास्थ्य मिशन (NUHM)

महत्वपूर्ण घटक:

- आशा कार्यकर्ता (ASHA)
- प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र (PHC)
- मातृ-शिशु स्वास्थ्य
- डिजिटल स्वास्थ्य प्रबंधन
- रोग निगरानी प्रणाली

3. कोविड-19 महामारी के दौरान NHM की भूमिका:

NHM की मदद से आशा कार्यकर्ताओं और ANM नर्सों ने गांवों तक स्वास्थ्य सेवाएँ पहुँचाई, घर-घर जाकर जागरूकता फैलाई और लक्षण वाले लोगों की पहचान की। PHC और CHC (Community Health Centers) को कोविड केयर सेंटरों में बदला गया, ऑक्सीजन और दवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित की गई। NHM की ई-हेल्थ प्रणाली ने कोविड केस, टीकाकरण और मृत्यु दर की निगरानी में सहायता की। झुग्गी बस्तियों और कमजोर तबकों तक स्वास्थ्य सेवाएँ पहुँचाने में NUHM ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।

4. भारत की वैश्विक भूमिका: कोविड-19 में सहयोग और संबंध

भारत ने NHM के माध्यम से घरेलू स्तर पर टीकाकरण किया और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 90+ देशों को टीके भेजे। भारत ने दवाओं, PPE किट, वेंटिलेटर और तकनीकी सहायता के रूप में कई देशों को मदद दी। इससे भारत की "विश्व सहयोगी" छवि बनी। भारत ने G-20, WHO, SAARC और UN मंचों पर महामारी प्रबंधन में सहयोग का आह्वान किया।

आर्थिक अस्थिरता, आर्थिक सुधार और विकास:

कोविड-19 महामारी केवल एक स्वास्थ्य संकट नहीं थी; यह एक गंभीर आर्थिक संकट भी बन गई। महामारी के कारण व्यापार ठप हुए, बेरोजगारी बढ़ी, और विकास दर में गिरावट आई। भारत जैसे विकासशील देश के सामने यह एक दोहरी चुनौती थी – आंतरिक आर्थिक अस्थिरता से निपटना और वैश्विक संबंधों में अपनी भूमिका को बनाए रखना।

1. आर्थिक अस्थिरता: महामारी की पहली प्रतिक्रिया

मार्च 2020 में लगाए गए लॉकडाउन ने औद्योगिक उत्पादन, सेवा क्षेत्र, और निर्यात पर गहरा असर डाला। छोटे व्यापार और MSMEs सबसे अधिक प्रभावित हुए। CMIE (Centre for Monitoring Indian Economy) के अनुसार मई 2020 में भारत की बेरोजगारी दर 23% तक पहुँच गई। श्रमिकों का बड़े पैमाने पर पलायन हुआ 2020-21 की पहली तिमाही में भारत की GDP में 23.9% की ऐतिहासिक गिरावट दर्ज की गई।

2. आर्थिक सुधार की पहलें: महामारी के उत्तर में नीतियाँ

प्रधानमंत्री ने ₹20 लाख करोड़ के राहत पैकेज की घोषणा की। इसमें लघु उद्योगों, किसानों, गरीबों, और स्वरोजगार को समर्थन दिया गया। रक्षा, अंतरिक्ष और कोयला क्षेत्र में निजी निवेश को प्रोत्साहन। उद्योगों में उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन (PLI) योजना। डिजिटल अर्थव्यवस्था, डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर (DBT) और UPI के माध्यम से वित्तीय समावेशन। महामारी ने डिजिटल परिवर्तन को गति दी – वर्क फ्रॉम होम, ई-कॉमर्स, ऑनलाइन शिक्षा, और डिजिटल लेन-देन में वृद्धि हुई।

3. विकास की दिशा में कदम: महामारी के बाद भारत का पुनर्निर्माण

2021-22 में भारत की GDP ग्रोथ 8.7% रही – यह संकेत देता है कि भारत ने मजबूती से वापसी की। महामारी के बाद वैश्विक कंपनियाँ चीन से हटकर भारत की ओर आकर्षित हुईं। इससे भारत को FDI (विदेशी निवेश) में बढ़ोतरी मिली। भारत ने हरित विकास और नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र में कदम बढ़ाए, जिससे वह वैश्विक जलवायु नेतृत्व में भी आगे आया।

4. भारत का वैश्विक सम्बन्ध: कोविड-19 के संदर्भ में आर्थिक कूटनीति

भारत ने दवाइयाँ और टीके वैश्विक स्तर पर वितरित किए – इससे फार्मा हब के रूप में पहचान मजबूत हुई। भारत ने सप्लाई चेन रेजिलिएंस इनिशिएटिव (SCRI) में जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ साझेदारी की। भारत ने G-20, ब्रिक्स और संयुक्त राष्ट्र मंचों पर विकासशील देशों की आवाज बनकर महामारी से निपटने में सहयोग दिया।

वित्तीय समावेशन,

वित्तीय समावेशन का अर्थ है – समाज के हर वर्ग को, विशेषकर गरीब, ग्रामीण और वंचित जनसंख्या को, औपचारिक बैंकिंग, बीमा, और वित्तीय सेवाओं से जोड़ना। कोविड-19 जैसी महामारी के दौरान जब दुनिया आर्थिक संकट से जूझ रही थी, भारत का वित्तीय समावेशन मॉडल एक नवाचार और नीति का आदर्श बनकर उभरा।

2. महामारी और वित्तीय समावेशन: भारत की भूमिका

प्रधानमंत्री जनधन योजना (PMJDY) के अंतर्गत खोले गए करोड़ों बैंक खातों ने महामारी के दौरान सीधी नकद सहायता (DBT) को संभव बनाया। लगभग 42 करोड़ से अधिक लाभार्थियों को लॉकडाउन के समय प्रत्यक्ष सहायता दी गई। महामारी के दौरान नकद के स्थान पर UPI, AEPS (Aadhaar Enabled Payment System), और मोबाइल वॉलेट का उपयोग कई गुना बढ़ा। इससे संपर्क रहित लेन-देन आसान और सुरक्षित हुआ। महिला स्वयं सहायता समूहों (SHGs) को वित्तीय सहायता मिली। मुद्रा योजना, स्टार्टअप इंडिया, और डिजिटल ऋण प्रणाली से छोटे व्यवसायों को राहत मिली। प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना, और अटल पेंशन योजना जैसे उपायों से सामाजिक सुरक्षा बढ़ी।

3. वैश्विक सम्बन्धों पर प्रभाव: भारत का उदाहरण

भारत ने वैश्विक स्तर पर “डिजिटल पब्लिक गुड्स” (Digital Public Goods) का मॉडल प्रस्तुत किया। G-20 और World Bank ने भारत की UPI प्रणाली और जनधन-आधार-मोबाइल (JAM ट्रिनिटी) की सराहना की। भारत ने AFI (Alliance for Financial Inclusion), UNDP, और IMF के साथ मिलकर विकासशील देशों के लिए एक केस स्टडी के रूप में योगदान दिया टीकाकरण और कोविड राहत के लिए डिजिटल पहचान और बैंक नेटवर्क की प्रभावशीलता ने भारत को ग्लोबल बेस्ट प्रैक्टिस में स्थान दिलाया।

4. चुनौतियाँ और आगे की राह:

ग्रामीण और कम साक्षर क्षेत्रों में डिजिटल पहुँच सीमित है। बैंकों तक पहुँच तो है, लेकिन वित्तीय जानकारी और जागरूकता अब भी बहुत सीमित है। फिनटेक स्टार्टअप्स और सरकारी प्रशिक्षण अभिया नवीन तकनीकों जैसे AI और ब्लॉकचेन के सुरक्षित उपयोग द्वारा सेवाएँ सुलभ बनाना

क्षेत्रीय सुरक्षा और रणनीतिक साझेदारी:

कोविड-19 महामारी ने वैश्विक शक्ति संतुलन को चुनौती दी। इसने न केवल देशों के आंतरिक ढाँचे की कमजोरी को उजागर किया, बल्कि क्षेत्रीय सुरक्षा और रणनीतिक साझेदारियों के नए स्वरूप भी निर्मित किए। भारत ने इस दौर में न केवल अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा की रक्षा की, बल्कि अपने रणनीतिक साझेदारों के साथ सहयोग को गहरा किया और एक विश्वसनीय क्षेत्रीय नेतृत्वकर्ता के रूप में उभरा। 2020 में गलवान घाटी में हुई झड़प ने महामारी के दौरान भी सीमाओं पर सुरक्षा खतरे को उजागर किया। भारत ने सुरक्षा दृष्टिकोण से रक्षा खर्च और सैनिक तैनाती को मजबूत किया। महामारी के दौरान डिजिटल डाटा और स्वास्थ्य प्रणालियों पर साइबर हमले बढ़े। भारत ने CERT-IN और NATGRID जैसे प्लेटफॉर्म के माध्यम से सुरक्षा उपायों को सशक्त किया। अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया और भारत का QUAD गठबंधन स्वतंत्र इंडो-पैसिफिक क्षेत्र की सुरक्षा हेतु महत्वपूर्ण बनकर उभरा। कोविड-19 टीके, समुद्री सुरक्षा और आपदा प्रबंधन में सहयोग बढ़ा। महामारी के दौरान भारत ने दवाओं, PPE किट, और तकनीकी मदद के माध्यम से क्षेत्रीय देशों के साथ भरोसा बढ़ाया। इससे पूर्वी एशिया और दक्षिण एशिया में भारत की रणनीतिक उपस्थिति मजबूत हुई। भारत ने कोविड काल में भी रक्षा उपकरणों के निर्यात को जारी रखा। मित्र देशों के साथ सैन्य अभ्यास (जैसे SIMBEX, MALABAR) महामारी के बावजूद ऑनलाइन या सीमित स्तर पर जारी रहे। भारत ने 90+ देशों को कोविड वैक्सीन भेजकर “विश्वगुरु” और “विश्वसाथी” की छवि मजबूत की। इससे उसकी रणनीतिक विश्वसनीयता और वैश्विक सहयोगिता बढ़ी। G20, SAARC, BRICS और SCO में भारत ने सामूहिक सुरक्षा, वैश्विक स्वास्थ्य, और साझी आपूर्ति श्रृंखला पर जोर दिया भारत

अब रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने के लिए मेक इन इंडिया और रक्षा स्टार्टअप्स को प्रोत्साहित कर रहा है। इंडो-पैसिफिक में सुरक्षा, समुद्री डकैती, और मानवीय सहायता में भारत की भूमिका बढ़ रही है। महामारी ने यह सिखाया कि “स्वास्थ्य सुरक्षा भी राष्ट्रीय सुरक्षा है”। भारत हेल्थ इन्फ्रास्ट्रक्चर, साइबरसुरक्षा, और रणनीतिक भंडारण को प्राथमिकता दे रहा है।

वित्तीय समावेशन,

कोविड-19 महामारी ने पूरी दुनिया को आर्थिक और सामाजिक रूप से झकझोर कर रख दिया। भारत जैसे विकासशील देश में संकट की गंभीरता उन लोगों के लिए सबसे अधिक थी, जो अब तक औपचारिक वित्तीय तंत्र से जुड़े नहीं थे। ऐसे समय में, भारत की वर्षों की मेहनत से बनी वित्तीय समावेशन की नींव ने करोड़ों नागरिकों को राहत पहुंचाई। इसके साथ ही भारत का डिजिटल और समावेशी वित्तीय मॉडल वैश्विक मंच पर एक आदर्श उदाहरण बन गया।

2. भारत में वित्तीय समावेशन की पृष्ठभूमि

प्रधानमंत्री जनधन योजना (PMJDY): 2014 में शुरू की गई इस योजना के तहत अब तक 50 करोड़ से अधिक बैंक खाते खोले गए। इनमें से लगभग 56% खाते ग्रामीण क्षेत्रों में हैं और लगभग 55% महिलाएँ लाभार्थी हैं। जनधन खाता + आधार + मोबाइल का मेल, जिससे गरीबों तक सरकारी लाभ सीधा और पारदर्शी रूप से पहुँचा।

3. कोविड-19 के दौरान वित्तीय समावेशन की भूमिका

लॉकडाउन के दौरान सरकार ने ₹30,000 करोड़ से अधिक की सीधी नकद सहायता जनधन खातों के माध्यम से वितरित की। महिला स्वयं सहायता समूहों को मुद्रा लोन व अन्य योजनाओं के माध्यम से समर्थन मिला। UPI (Unified Payments Interface), Aadhaar Enabled Payment Systems (AEPS) और मोबाइल बैंकिंग के प्रयोग में भारी वृद्धि हुई ग्रामीण क्षेत्रों में बैंक मित्रों की भूमिका अहम रही। कोरोना से लड़ने में बीमा योजनाओं जैसे प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना और स्वास्थ्य बीमा योजनाओं की पहुँच का भी लाभ मिला।

4. वैश्विक सम्बन्ध और भारत की भूमिका

भारत का डिजिटल भुगतान और DBT मॉडल वैश्विक स्तर पर नवाचार और दक्षता का प्रतीक बना। विश्व बैंक, IMF और G20 ने भारत के JAM मॉडल को “स्मार्ट गवर्नेंस” की मिसाल बताया। महामारी के दौरान भारत ने वैक्सीन मैत्री और दवाओं के साथ-साथ डिजिटल वित्तीय सहायता मॉडल भी अन्य देशों से साझा किया। भारत ने अफ्रीकी और एशियाई विकासशील देशों को डिजिटल वित्तीय समावेशन के मॉडल अपनाने में तकनीकी सहायता दी।

5. चुनौतियाँ और सुधार की दिशा

इंटरनेट और स्मार्टफोन की सीमित पहुँच अब भी ग्रामीण व पिछड़े क्षेत्रों में एक बाधा है। बैंक खाते होने के बावजूद कई लोग इसका सही उपयोग नहीं जानते। फिनटेक स्टार्टअप्स, स्थानीय भाषा आधारित ऐप्स, और वित्तीय शिक्षा अभियान शुरू करना।

निष्कर्ष

भारत में वित्तीय समावेशन ने कोविड-19 महामारी के दौरान एक आर्थिक जीवनरेखा का कार्य किया। इससे न केवल करोड़ों लोगों को संकट में सहायता मिली, बल्कि भारत ने दुनिया को यह दिखाया कि डिजिटल तकनीक और समावेशी नीति के माध्यम से कैसे समाज के सबसे अंतिम व्यक्ति तक सहायता पहुँचाई जा सकती है। आज भारत का JAM मॉडल और UPI प्रणाली विश्व पटल पर एक आदर्श उदाहरण बन चुके हैं। ऐसे में भारत का वैश्विक सम्बन्ध केवल व्यापार या रणनीति तक सीमित नहीं, बल्कि सहयोग, समावेशन और मानवता की ओर बढ़ रहा है। कोरोना महामारी ने भारत की राष्ट्रीय नीति में आत्मनिर्भरता और अंतर्राष्ट्रीय नीति में सह-अस्तित्व और सहयोग के सिद्धांतों को प्रकट किया। भारत अब केवल वैश्विक मंच पर एक भागीदार नहीं, बल्कि नेतृत्वकर्ता के रूप में उभर रहा है — विशेष रूप से स्वास्थ्य कूटनीति, डिजिटल नवाचार और मानवीय सहायता के क्षेत्र में। कोविड-19 महामारी एक वैश्विक संकट अवश्य था, लेकिन भारत के लिए यह स्वास्थ्य सुधार, कूटनीतिक नेतृत्व और वैश्विक जिम्मेदारी निभाने का अवसर भी था। भारत ने इस संकट में न केवल अपने नागरिकों की रक्षा की, बल्कि विश्व समुदाय के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा होकर यह साबित किया कि वह केवल एक उभरती शक्ति नहीं, बल्कि एक नैतिक नेतृत्वकर्ता राष्ट्र भी है। इस महामारी से निकले सबक, नीति सुधार और वैश्विक सहयोग की भावना ही आने वाले समय में भारत के वैश्विक संबंधों की दिशा तय करेंगे। कोविड-19 महामारी एक वैश्विक संकट अवश्य था, लेकिन भारत के लिए यह स्वास्थ्य सुधार, कूटनीतिक नेतृत्व और वैश्विक जिम्मेदारी निभाने का अवसर भी था। भारत ने इस संकट में न केवल अपने नागरिकों की रक्षा की, बल्कि विश्व समुदाय के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा होकर यह साबित किया कि वह केवल एक उभरती शक्ति नहीं, बल्कि एक नैतिक नेतृत्वकर्ता राष्ट्र भी है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन भारत की स्वास्थ्य प्रणाली की रीढ़ सिद्ध हुआ, जिसने महामारी जैसी वैश्विक आपदा में भी देश को संगठित और तैयार बनाए रखा। वहीं भारत ने वैश्विक मंच पर भी सक्रिय भूमिका निभाकर यह सिद्ध किया कि वह न केवल घरेलू संकट से निपट सकता है, बल्कि विश्व के लिए एक स्वास्थ्य नेतृत्वकर्ता भी बन सकता है।

आपके विषय — "आर्थिक अस्थिरता, आर्थिक सुधार और विकास: कोरोना महामारी और भारत का वैश्विक सम्बन्ध" — में हम यह समझ सकते हैं कि कैसे कोविड-19 महामारी के कारण भारत की अर्थव्यवस्था अस्थिर हुई, किन आर्थिक सुधारों की आवश्यकता पड़ी और इससे भारत के वैश्विक संबंधों पर क्या प्रभाव पड़ा। नीचे इस विषय पर एक संगठित, तथ्यपूर्ण और विचारशील निबंध प्रस्तुत है कोरोना महामारी ने भारत को गंभीर आर्थिक अस्थिरता के दौर से गुजारा, लेकिन साथ ही उसे आर्थिक सुधार करने और वैश्विक मंच पर नई भूमिका निभाने का अवसर भी दिया। भारत ने जिस लचीलापन, नीतिगत नवाचार, और मानवता के साथ सहयोग का प्रदर्शन किया, वह न केवल घरेलू विकास के लिए बल्कि वैश्विक संबंधों के सुदृढ़ीकरण के लिए भी प्रेरणादायक है। आने वाले समय में भारत को सतत विकास, रोजगार सृजन, और नवाचार-आधारित अर्थव्यवस्था की दिशा में बढ़ते हुए वैश्विक नेतृत्वकर्ता बनने का अवसर मिल सकता है। कोरोना महामारी के दौरान वित्तीय समावेशन भारत की समावेशी विकास नीति का सबसे सशक्त स्तंभ बनकर सामने आया। इसने यह साबित किया कि एक मजबूत, डिजिटल और सामाजिक रूप से उत्तरदायी वित्तीय प्रणाली अर्थव्यवस्था को स्थिर रखने, गरीबों को सुरक्षा देने और वैश्विक नेतृत्व की भूमिका निभाने में सहायक हो सकती है। कोविड-19 ने क्षेत्रीय और वैश्विक भू-राजनीतिक संरचना को झकझोर दिया, पर भारत ने इस संकट को रणनीतिक अवसर में बदला। सीमा सुरक्षा को मजबूत करते हुए भारत ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सहयोग, संवाद और सहभागिता का मार्ग चुना। इसने न केवल उसकी क्षेत्रीय स्थिति को बल दिया, बल्कि भारत को एक सशक्त, उत्तरदायी और भविष्य-निर्माता राष्ट्र के रूप में स्थापित किया।

संदर्भ:

1. " रंजीत कुमार भारत में कोविड-19 महामारी के प्रभावों और प्रतिक्रियाओं पर आधारित पुस्तक।

2. " अजय सिंह चौहान कोविड-19 महामारी के समय भारत की विदेश नीति पर विश्लेषण।
3. " भारतीय विदेश नीति अध्ययन पत्रिका भारत द्वारा कोविड-19 वैक्सीन वितरण और कूटनीतिक पहल पर शोध।
4. भारत का वैश्विक स्वास्थ्य सहयोग और महामारी के दौरान उसकी भूमिका पर अध्ययन।
5. भारत के योगदान के बारे में WHO की रिपोर्ट, जिसमें वैश्विक स्वास्थ्य संकट में भारत की भूमिका पर चर्चा की गई है।
6. संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट, जिसमें भारत के वैश्विक सहयोग की भूमिका पर विचार किया गया है।
7. भारत की वैक्सीनेशन कूटनीति और वैश्विक टीकाकरण प्रयासों पर समाचार रिपोर्ट।
8. भारत की दूसरी लहर और वैश्विक संबंधों पर इसके प्रभावों पर समाचार लेख।
9. भारत सरकार द्वारा कोविड-19 टीकाकरण अभियान और अंतरराष्ट्रीय सहयोग पर रिपोर्ट्स।
10. SAARC और G20 बैठकें और भारत द्वारा पेश की गई पहल पर दस्तावेज़।
11. विदेश मंत्रालय की वेबसाइट पर भारत की विदेश नीति और महामारी से संबंधित गतिविधियाँ।